

अध्याय बारवाँ

॥श्री गणेशाय नमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ श्री सिद्धारूढाय नमः॥

"जो भक्तों को परम प्रिय ऐसे सच्चिदानंद रूप में दिखाई पड़ते हैं, जो सर्वशक्तिमान होते हुए भक्तों के मन में हमेशा बसते हैं, जो सदा नित्यानन्द में तल्लीन होते हैं तथा सभी लोगों पर नियंत्रण रखते हैं, ऐसे सिद्धगुरुवर्यजी, मुझे मोक्षमार्ग दिखाईए।"

श्रीसिद्धारूढ स्वामी सतगुरुनाथजी, ये अत्यंत कृपालु हैं और उन्हें शरणागत होने वाले किसी को भी वे भवसागर में डूबने नहीं देते। वे स्वयं दुख सहकर भक्तों के कष्ट हरण करते और उन्हें मोक्षमार्ग दिखाकर उनका उद्धार करते थे। ऐसे ये सतगुरु महाराज, केवल जनोद्धार का कार्य करने हेतु इस मृत्युलोक पधारे और उन्होंने अनेक चमत्कार दिखाकर जीवात्माओं का सहजता से उद्धार किया। अस्तु। सिद्धनाथजी अति कष्टों को सहते हुए संचार करते हुए जब उन्हें कुछ रोग होता था, उस समय वे अनशन करके रोग निवारण कराते थे। मन को कष्ट पहुँचा तो, मन को क्रोध की चरमसीमा तक जाने दिये बिना उसे ब्रह्मयोग में लीन करके, उद्विग्नता का निवारण कराते थे। इस प्रकार पारमार्थिक उपायों से शरीर की पीड़ा का निवारण कराने से उनके मन में ब्रह्मानंद दृढ हो गया। उससे वे ललन से संचार में समय व्यतित करने लगे। भूख तथा प्यास की तृप्ति करने हेतु प्रारब्धरूपी सेवक निश्चित रूप से उपस्थित है, ये जानकर किसी भी वस्तु से आसक्त हुए बिना या किसी भी बात का खेद किए बिना सिद्धनाथ व्यवहार करते थे। इस प्रकार भ्रमण करते हुए वे गोकक के समीप होने वाली नदी के किनारे पहुँचते ही वहाँ के एक नाविक ने उन्हें रस्सी पकड़कर नाव को नदी में खींचने के लिए कहा। नाव नदी के ऊँचाई पर होने वाले किनारे पर होने के कारण, सिद्धनाथजी ने आसानी से उसे नदी गभ में खींची हुई देखते ही नाविक को लगा की यह मनुष्य जरूर योगसिद्धि में निपुण होगा। उसने सिद्धनाथजी को नाव में बिठाकर नदी के उस पार लगाया, वहाँ से चलते हुए सतगुरुजी हुबली शहर पहुँचे। जिस प्रकार सिर पर रखा भार जमीन पर रखते ही शांति की भावना का अनुभव होता है, वही अनुभव सिद्धनाथजी को तोरवी वापी (जगह का नाम) पहुँचते ही हुआ। वह जगह साफ न होने के कारण उनका सारा

शरीर कीडेमकोड़ों ने आक्रमित कर लिया, फिर भी उन्होंने कहा की वह जगह चित्त जागृत रखने के लिए बहुत अच्छी है। कुछ बालकों ने उन्हें देखते ही तुरंत जाकर मदलेटप्पा नाम के साहूकार को समाचार पहुँचाया। उस साहूकार ने वापी आकर सिद्धयोगीजी को देखा और अति दयालुता तथा भक्तिभाव से उनका हाथ पकड़कर अपने घर ले गया, स्नान कराके सफेद वस्त्र पहनाये। उसपर स्वामीजी को पकवानों का भोजन देकर शय्यापर सुलाया। उसके बाहर जाते ही सिद्धजी ने वह स्थान छोड़ दिया, सभी वस्त्रों का त्याग किया और फिर वे वापी पहुँचे। सिद्धनाथजी को अपनी जगह न पाकर साहूकार ने चारों ओर उनकी खोज शुरू की। उस समय वह सदगुणी साहूकार मन में बोला की ऐसे होते हैं सच्चे वैरागी मनुष्य, जो विषय उपभोगों को तुच्छ समझते हैं; उस समय उसके मन से भी विषय उपभोग की लालसा नष्ट हो गयी।

यह समाचार सुनते ही गुरुलिंगशास्त्री अन्य भक्तों को साथ लेकर सतगुरुजी के पास आकर उन्हें प्रश्न पूछने लगे। अन्य शास्त्री जो थे, वे भी वहाँ पधारे, सिद्धारूढ़जी ने सभी के संदेहों के उचित उत्तर देने के कारण उनकी तसल्ली हुयी। एक दिन बसवण्णा नाम के एक भक्त ने आकर उनसे प्रार्थना की, "हे सतगुरुजी, अगर आप चाहे तो मेरे घर आकर वासिष्ठ पुराण कथा पर प्रवचन कीजिए। आपके मुँह से वासिष्ठ-पुराणकथा सुनने की सभी भक्तों की मनोकामना है।" उस समय सिद्धारूढ़जी ने सोचा की अच्छा हुआ, इस प्रकार अब मेरी उपासना का आरंभ हो गया। अब मेरा बचाखुचा प्रारब्ध इन अज्ञानी लोगों का उद्धार करने के काम लाना चाहिए, ऐसा सोचकर सिद्धनाथजी प्रतिदिन बसवण्णा के घर जाने लगे। प्रतिदिन रात के चार घंटे वे योगवासिष्ठ पर प्रवचन करते थे। एक दिन गुरुलिंगशास्त्री वहाँ आकर सिद्धारूढ़जी से बोले, "आप कहते हैं की आत्मा शरीर में है, लेकिन हमें वह दिखाई क्यों नहीं देती?" सिद्धजी ने कहा, "जो वस्तु स्पर्श से जानी जाती है, वह आँखों को दिखती नहीं। स्पर्श, दर्शन तथा श्रवण या प्रत्यक्ष (ज्ञानेन्द्रियों से समझा जानेवाला), अनुमान और आगम (श्रुति अथवा वेद) ये तीन प्रमाण (निर्णायक आधार) हैं। इन तीनों में से, जो वस्तु एक प्रमाण से जानी जाती है, वह दूसरे प्रमाण से नहीं जानी जा सकती। उसी प्रकार ज्ञानी मनुष्य आत्मा का अस्तित्व निश्चित रूप से

समझ गया हो, लेकिन अज्ञानी मनुष्य वह समझ नहीं पाता। ये किस प्रकार का ज्ञान होता है, ये भी आपको समझाता हूँ। सब से प्रथम जीवात्मा और जीवात्मा को छोड़कर अन्य वस्तुएँ इनका विचार (आत्मानात्म चर्चा), उसके पश्चात 'अहं ब्रह्मास्मि' इस महावचन का शुद्ध ज्ञान, ये सभी बातें बुद्धि से जान लेनी चाहिए। जो बुद्धि पहले जीवस्वरूप (यानी आत्मस्वरूप) से विभिन्न या विलग होती है, उसका त्याग करके ब्रह्मरूप करते समय इन दोनों का जहाँ मेल होता है, उस स्थिति में निर्विकल्प ज्ञानप्राप्ति होती है, उसी स्थिति में आत्मा का अनुभव होता है। अगर ये पूछोगे की आत्मा का किस प्रकार अनुभव होता है, तो समझ लो की, माया का पटल दूर हुई सर्वव्यापी बुद्धि उसका अनुभव करती है, लेकिन इंद्रिय नहीं। तुम्हारे पास केवल शब्दपांडित्य होने के कारण इंद्रियों के बिना जो अनुभव प्राप्त होता है, उसकी तुम्हें अनुभूति न होने के कारण, आत्मा दिखाई न देने का संदेह तुम्हारे मन में जागा है।" उसपर गुरुलिंगप्पा ने कहा, "हे गुरुवर्य, आप जो कहते हैं वह पूर्ण रूप से सत्य है," और सिद्धजी को प्रणाम करके वह घर लौटा। उस जगह अनेक लोगों का आनाजाना होने के कारण, मन की एकाग्रता भंग करने वाला जनसंग छोड़कर सिद्ध डुमगेरी (जगह का नाम) गये। वहाँ वे एक चबूतरेपर बैठते थे, चरवाहों को इकट्ठा करके उनके साथ खेलते थे और इतना ही नहीं, चुराकर पेड़ों के फल तथा भोजन लाकर उन्हें देते थे। इस प्रकार वे बहुत आनंद से दिन बिता रहे थे की एक दिन एक कटहल चुराकर ले जाते समय, एन मौके पर कटहल के पेड़ का मालिक वहाँ आया, उसने सिद्धजी को पकड़ा और पूछा, "भैया, कटहल चुराकर क्यों ले जा रहे थे?" सिद्धजी ने कहा, "हम सभी को खाने के लिए," ये सुनकर क्रोधित होने के कारण उसने सिद्धजी को दो थप्पड़ लगाये तब उन्होंने वह कटहल दूर फेंक दिया। वह कटहल लेकर बच्चे दूर भाग गये। मालिक भी बच्चों के पीछे भागा। तब सिद्धजी ने कहा, "जब वैकुंठवासी भगवान श्रीकृष्ण पर बिना वजह स्यमंतक मणी चुराने की तोहमत लगाई गयी थी, तो उसकी तुलना में हम जैसे लोगों की बात ही क्या है! स्यमंतक मणी की चोरी होने के कारण भगवान का विवाह जांबुवति तथा सत्यभामा से हुआ, कम से कम हम गृहस्थी की पीड़ा से तो बचे, ये बहुत अच्छा हुआ।" कहते हुए सिद्धनाथ वहाँ से भाग निकले। "कर्म के पाशों से इसी

प्रकार मुक्त होना पड़ता है," ऐसा कहते हुए चित्घनानंद समाधि में प्रवेश करके शांति से सो गये। उन दिनों में अनेक लिंगायत लोग आकर सिद्धनाथजी की पूजा करके उन्हें प्रणाम करते थे, उनके अलावा अन्य भक्तगण भी आते थे। इस प्रकार उनकी कीर्ति फैलती हुयी देखकर एक लिंगायत मनुष्य मत्सर से जलने लगा और एक बार रात को आकर उसने सिद्धजी से कहा, "तुम गले में शिवलिंग धारण नहीं करने के कारण तुम भवी हो और फिर भी अन्य लिंगायत लोगों से प्रणाम कराते हो। इसीलिए अभी मैं तुम्हें दंड देता हूँ।" ऐसा कहते हुए उसने चबूतरे पर बैठे हुए सिद्धनाथजी को उठाकर नीचे पड़े पत्थर पर पटक दिया। इसके बाद वह सिद्धजी की फिर से पिटाई करता, कहीं से कुछ आवाज सुनने के कारण भयभीत होकर वहाँ से भाग गया। सिद्धनाथजी का पूरा शरीर लहलुहान हुआ, घुटने फटकर खून बहने लगा। खून पोंछकर शांति से वे मंदिर में जाकर बैठे, जैसे की ये सारी दुःखद घटनाएँ किसी दूसरे के साथ हुयी हो, ऐसा लगे यहाँ तक उन्होंने अपने शरीर के अभिमान का त्याग किया था। इसलिए दुख की प्रतीति न होने के कारण उन्होंने अपना चित्त ब्रह्मानंद में एकाग्र किया। दूसरे दिन हररोज की तरह हन्नेई (एक मठ का नाम) मठ के स्वामीजी ने आकर सिद्धनाथजी शरीर के जखमों को देखकर उन्हें उनके बारे में पूछा। तब सिद्धनाथजी ने कहा, "प्रारब्धकर्म हमें भोग (सुख तथा दुख का अनुभव कराके) देकर जल्द ही खत्म हो रहा है। उस से विदेही (स्वयं के शरीर पर ममता न होने की ज्ञानी मनुष्य की स्थिति, यहाँ 'ममता' का अर्थ है, मैं और मेरा/मेरी यह भावना) स्थिति तथा मोक्ष ये दोनों मेरे समीप लाकर, प्रारब्ध मेरी मदद ही कर रहा है।" सिद्धनाथजी की स्थिति देखकर मन ही मन तड़प उठे स्वामीजी ने उन्हें मठ ले जाकर बहुत उपचार करने के पश्चात कुछ दिनों में वे स्वस्थ हो गये। उसके बाद सिद्ध फिर वहीं वापस लौट आये और पहले जैसे चरवाहों के संगती में खेलकर दिन बिताने पश्चात रात को समाधि में लीन होने लगे। इस प्रकार वे दिन बिताते समय उनके दर्शन हेतु अनेक लोग वहाँ आते थे। कुछ मूर्ख लोग इस बात को सह नहीं पाये और सिद्धनाथजी की जान लेने हेतु ताक में रहे हुए थे। उन्होंने एक बार सिद्धजी को सूखे हुए कुएँ में फेंक दिया, वहाँ उन्हें बहुत काँटे तथा कंकड चुभे, फिर भी उन्हें अधिकाधिक

शांति का अनुभव होने लगा। सिद्धयति की मृत्यु नहीं हुयी ये देखकर मन ही मन झल्लाए हुए उन मूर्खों ने उन्हें एक सुनसान घर में बंद कर दिया और वे चले गये। सिद्धनाथजी वहाँ मच्छर तथा कीडेमकोड़ों के काटने से होनेवाले कष्ट सहते हुए शांत चित्त से बैठे रहे। तीन दिनों के पश्चात साक्षात ईश्वर उनके पास आकर बोला, "हे मेरे परमप्रिय भक्त, मैं तुम्हारा संकट निवारण करने हेतु यहाँ आया हूँ।" उसने उनके शरीरपर प्रेम से हाथ फेरा, जिससे उनका ज्वर नष्ट हुआ। इस प्रकार उनपर बिते हुए संकट आदि प्रार्थना किए बिना ही प्रत्यक्ष परमेश्वर आकर दूर करके उनके शरीर का रक्षण करता था। लिंगायत पंथ के अभिमानी लोगों ने एक प्रचंड सभा का आयोजन करके उस सभा में सिद्धनाथजी भवी होने के कारण कोई भी उन्हें प्रणाम न करें, ऐसा प्रस्ताव तैयार किया। फिर भी मुमुक्षु जनों का उस प्रस्ताव की परवा किये बगैर सिद्धनाथजी के दर्शन करने आते रहना हंदरय्या नाम का एक लिंगायत सह नहीं पाया। एक बार रात का एक प्रहर समाप्त होने के पश्चात उसने सिद्धनाथजी को जगाया और उनके सिरपर चप्पलें रखकर कहा, "अगर ये चप्पलें नीचे गिर जाए, तो मैं तुम्हें मार मारकर तुम्हारे प्राण ले लूँगा।" सिद्धनाथजी शांति से खडे रहे, परंतु एक घंटे के बाद, किंचित हालडोलने से एक चप्पल नीचे गिर गई। हंदरय्या खजूर से बनी हुई शराब पीने के कारण नशे में था, वह लाठी से उन्हें पीटने लगा, पीटते पीटते बोला, "अगर तुम 'आरूढ' (यानी त्रिगुण और षड्रिपुओं पर जो आरूढ हुआ है अर्थात् जिसने इन दोनोंपर विजय प्राप्त की हो वह) हो गये हो, तब तुम शराब क्यों नहीं पी सकते? क्योंकि शराब के नशे में सुख तथा दुख और सभी भेद नष्ट हो जाते हैं। अन्यथा तुम्हें 'आरूढ' नाम से संबोधित नहीं करना चाहिए," ऐसा कहते हुए वह उन्हें कुचलने लगा। इतने में भोर हो गयी, अब भक्तगण आयेंगे तो हंदरय्या को पकडकर पीटेंगे, यह सोचकर सतगुरुनाथजी ने कहा, "इतनी देर तक यहाँ कोई भी न होने के कारण, मेरी पिटाई करने का तुम्हारा काम निश्चित रूप से हो रहा था, परंतु अब यहाँ भक्तगण भजन करने हेतु आयेंगे, इसलिए अब यहाँ से जल्दी चले जाना तुम्हारे लिए अच्छा होगा। वर्ना अगर वे लोग मेरी पिटाई करते हुए तुम्हें देख लेंगे, तो क्रोधित होकर तुम्हें बहुत पीटेंगे और मुझ से वह देखा नहीं जायेगा।" उनकी बात सुनते ही वह भाग

खडा हुआ। उतने में अनेक भक्त वहाँ इकट्ठा हुए और सतगुरुजी का सारा शरीर कुचला हुआ देखकर अत्यंत खेद से बोले, "लगता है किसी दुष्ट ने रात यहाँ आकर आपकी पिटाई की है। वह कौन है यह आप हमें बताईए, ताकि हम उसे पूरी तरह से दंड देंगे। तब मुस्कराते हुए सिद्धनाथजी ने कहा, "जो होना है, वह निश्चित रूप से होकर ही रहेगा, इसलिए आप उसके बारे में व्यर्थ चिंता न करें। प्रारब्ध कर्म से ही सुख तथा दुख प्राप्त होते हैं, उससे कर्मों का क्षय भी होता रहता है। अगर उसके निवारण के लिए कोशिश की जाए, तो फिर से उन कर्मों की संचित में वृद्धि होती है जो पुनर्जन्म का कारण बनता है। इसीलिए जो मोक्ष का इच्छुक है, उसे दूसरों ने किया हुआ नमन अथवा निंदा इन दोनों के कारण हृदय में विकारों से विचलित हुए बिना सब कुछ शांति से सहना चाहिए।" उनके ये शब्द सुनकर प्रेमभाव से गद्गद् होकर भक्तगण आँसू बहाते हुए कहने लगे की ये तो साक्षात् परमात्मा ही है। बहुत समय तक वे सभी गुरुचरणों के समीप बैठकर क्रोध तथा दुख व्यक्त करके घर लौट गये। ओढ़ने के लिए अगर सिद्धारूढ़जी को कोई एकाध धोती देता, तो एक पापी मनुष्य आकर तुरंत उसे उठाकर ले जाता था, परंतु सिद्धनाथजी ने कभी भी उसका प्रतिकार नहीं किया। एक बार हेग्गेरी (जगह का नाम) में स्थित चूने से बँधे हुए एक चबूतरे पर सिद्धजी बैठे थे, उस समय एक लिंगायत अपने सिर पर भोजन से भरी टोकरी ले जा रहा था। उसके हाथ में एक जलती हुई उपली थी। जब उसने देखा की सिद्धनाथजी मौन धारण किये बैठे हैं, तब वह मन ही मन बोला अपने आपको साधु कहलवाकर शांति से बैठा है और स्वयं मौन धारण करके दूसरों को पागल बनाता है। अब इसकी परीक्षा लेनी चाहिए। उसपर उसने वह जलती उपली सतगुरुजी के सिर पर रख दी, वहाँ वह जलती रही परंतु सिद्धजी शांत चित्त होकर वहीं बैठे रहे। सिद्धनाथजी सोच रहे थे की बचपन में मेरे सिर पर एक साँप चढ़कर बैठा था, तब मैंने कहा था की भगवान महादेव के गले को गौरवित करने वाला साँप मेरे सिर को शोभा दे रहा है। उसी प्रकार आज मुझे ऐसा लग रहा है की जैसे श्रीशिवजी ने अपनी तीसरी आँख मेरे सिरपर रखी हो। उसी समय दूसरा एक मनुष्य उस मार्ग से जा रहा था। उसने सिद्धनाथजी को ऐसी स्थिति में देखते ही, उस लिंगायत को बहुत सारी गालियाँ देते हुए लाठी से वह

जलती उपली नीचे गिरायी। जो मनुष्य महात्माओं को पीड़ित करते हैं, ऐसे लोगों के लिए ब्रह्मदेव ने वैतरणी नदी जैसे नरक की निर्मिती की है, जिस में गिरकर वे प्रलयकाल तक तड़पते रहते हैं।

अस्तु। भीमप्पा उज्जणवर नाम का एक सज्जन पुत्र प्राप्ति के लिए अनेक सत्कर्म करता था तथा सिद्धजी की अपार श्रद्धा से सेवा करता था। इस प्रकार अनेक दिन सेवा करने के पश्चात एक दिन उसने सतगुरुजी से प्रार्थना की, "हे सतगुरुनाथजी, कृपा करके मुझे एक सुशील बेटा दीजिए।" सिद्धनाथजी ने पूछा, "तुम्हें तुम्हारे दोनों कुलों का उद्धार करने वाला ज्ञानी पुत्र चाहिए या कर्मों में रत रहते हुए सांसारिक ताप बढ़ाने वाला पुत्र चाहिए?" उसपर वह शुद्ध मन से बोला, "मुझे ज्ञानी पुत्र ही चाहिए।" अगर ऐसा है तो तुम मुझे ही अपना पुत्र समझ लो और उसी भावना से मेरी सेवा करो। उससे तुम्हें अक्षय पुण्यलाभ होगा, जो किसी भी अन्य पुत्र का पालन पोषण करने से नहीं मिलेगा।" ये बात सुनते ही भीमप्पा अत्यंत हर्षित हुआ। उसके पश्चात सिद्धजी उसके घर जाकर रहे। भीमप्पा के घर में रहकर हुए सिद्धनाथजी ने अनेक लीलाएँ दिखाकर उस दम्पति को आनंदित किया और इस प्रकार उनका उद्धार किया। लोगों ने भीमप्पा की बहुत निंदा की, उसने एक भवी की संगति करने का आरोप लगाकर लिंगायत लोगों ने उसे बहिष्कृत किया, लेकिन वह मन से निश्चल और शांत रहा। श्रोतागण, अब अगले अध्याय में दी हुई विचित्रतापूर्ण कथा सुनिए, जिससे आपके सभी दुखों का निवारण होकर अपार सुख की प्राप्ति होगी। अस्तु। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ़ कथामृत का मधुर सा यह बारवाँ अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढ़चरणारविंदार्पणमस्तु ॥